अपने अन्तः के देवता को जगाइये

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अपने अंतः के देवता को जगाइये

युग समस्याएँ जानी पहचानी हैं। समाधान भी सभी विचारवानों को विदित है। फिर से उस सन्दर्भ में अधिक ध्यान देने के लिए कहा जाता रहता है कि तथ्यों पर जिस हलके ढंग से विचार किया जाता रहा है वह अपर्याप्त है। ढर्रे का आवरण उठाकर हमें वास्तविकता को देखना चाहिए। इसी को तत्वदर्शन या ईश्वर दर्शन कहते हैं। इसी का नाम आत्म साक्षात्कार अथवा ब्रह्म निर्वाण है। ढर्रे का अभ्यास ही भव बन्धन है। माया अर्थात् अवास्तविकता की खुमारी। इसे हटाया और तथ्य को अपनाया जा सके तो समझना चाहिए कि जीवन मुक्ति के मार्ग का अवरोध मिट गया।

मनुष्य जीवन ईश्वर का बहुमूल्य अनुदान है। इसे इनाम नहीं अमानत माना जाय। भव-बन्धनों के कुचक्र से निवृत्ति, पूर्णता की प्राप्ति–स्वर्ग और मुक्ति की उपलब्धि-सिद्धियों की विभूति; आत्मा और परमात्मा की एकता—जैसी महान सफलताएँ इस एक ही तथ्य पर निर्भर हैं कि यथार्थता को हृदयंगम करना सम्भव हो सका या नहीं ?

कहने सुनने को तो आदर्शवादी बकवास आये दिन चलती रहती है, पर वस्तुतः उसमें कुछ सार नहीं। अध्यात्म का लाभ एवं चमत्कार मात्र उन्हीं को मिलता है जो उसे कल्पना लोक की उड़ान न मानकर जीवन दर्शन के रूप में मान्यता देते और तदनुरूप दिशा धारा का निर्धारण करते हैं।

युग सन्धि की ब्रह्म वेला में जागृत आत्माओं का आत्म-चिन्तन, जीवन दर्शन की यथार्थता के साथ जुड़ सके तो काम चले। सोचा जाय कि अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य को जो विशेष मिला है वह शौक–मौज भर के लिए है ? विचारा जाय कि चौरासी चक्र मे छूटने के–पूर्णता तक पहुँचने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के–ईश्वर के साथ अनन्य होने के इस स्वर्ण सुयोग को आगे भी इसी तरह नष्ट करते रहना उचित है जैसा कि अब तक किया जाता रहा ? लोग क्या कहते और क्या करते हैं इसे देखने, सुनने और उन्ही का अनुकरण करने से तो एक के पीछे एक एक करके गर्त में गिरने वाली भेड़ों की तरह अपनी भी दुर्गति ही होनी है । क्या इस दुर्भाग्य से बचा नहीं जा सकता ।

थोड़ी दूरदर्शिता और थोड़ी साहसिकता अपनाने पर उन तथाकथित परिस्थितियों का स्वरूप ही बदल सकता है जो लक्ष्य पथ पर चल सकने की असमर्थता–विवशता बनकर सामने आती रहती है । मकड़ी अपना जाला आप बुनती है और उसमें फंसकर छटपटाती और जिस-तिस को दोष देती है । किन्तु जब अपना चिन्तन उलटती है तो अपने बुने जाले के धागों को समेटती निगलती चली जाती है । निविड़ दीखने वाले बन्धन देखते-देखते सांझ के रंगीन बादलों की तरह अदृश्य होने लगते हैं ।

सामान्यतया मनुष्य जीवन की गरिमा का समुचित उपयोग विश्व उद्यान को सुरम्य बनाने में योगदान देकर इस सुअवसर को सार्थक बनाने में ही है । पेट प्रजनन तक अन्यान्य प्राणियों को सीमित रहना शोभा देता है, मनुष्य को नहीं । अन्य प्राणियों को साधन सीमित मिले हैं । उनकी शरीर संरचना और बौद्धिक क्षमता इतनी ही है कि अपना निर्वाह जीवनभर चला सकें । किन्तु मनुष्य तो सृष्टा का युवराज है । उसे इतना मिला है कि अपनी विशेषताओं के सहारे उसे तनिक-सा श्रम मनोयोग लगाकर चुटकी बजाते उपार्जित कर सकता है और शेष विभूतियों से आत्म-कल्याण और लोक–कल्याण जैसे उच्च उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है ।

इस सुअवसर को ठुकरा कर जो तृष्णा, वासना का–लोभ–मोह का–अनावश्यक भार संजोते और ढोते हैं, उनकी समझदारी को किस तरह सराहा जाय ? दल-दल में घुसते जाना और उसकी सड़न से खीजते और जकड़न से चीखते जाना, किसी का लादा हुआ नहीं स्वयं ही अपनाया हुआ दुर्भाग्य है । यह अनिवार्य नहीं,अपना ही चयन है कोई चाहे तो इस स्थिति को किसी भी समय बदल भी सकता है । इसके लिए बहुत कुछ करने की आवश्यकता नहीं

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पड़ती । मात्र दृष्टिकोण उलटना और कार्यक्रम बदलना पड़ता है । इस परिवर्तन से व्यवस्था विगड़ती नहीं वरन् और भी अच्छी बन जाती है । किन्तु उस अदूरदर्शिता को क्या कहा जाय जो अभ्यस्त ढर्रे के रूप में सिर से पैर तक लद गई है। कोई चाहे तो उसे सहज ही उतार भी सकता है ।

माया छाया की तरह है वह आगे-आगे चलती और नेतृत्व करती है । किन्तु जब प्रकाश की ओर पीठ किये रहने की प्रक्रिया बदली जाती है, दिशा को उलट दिया जाता है तो सूर्य के सम्मुख होते ही छाया पीछे दौड़ने लगती है । परिस्थतियों की विवशता के सम्बन्ध में ऐसा ही सोचा जाता है कि वही बाधक हो रहा है । किन्तु ऐसा है नहीं । चिन्तनका प्रतिगामी ढर्रा ही बाधक है । यदि आदर्शवादी आधार अपनाकर नये ढंग से सोचना और गति विधियों का नये सिरे से निर्धारण कर सकना सम्भव हो सके तो प्रतीत होगा कि समस्त गुत्थियाँ सुलझ गईं । ऐसा मार्ग निकल आया जिस पर चलते हुए लोक और परलोक का सुव्यस्थित रीति से सध सकना सम्भव ही नहीं सरल भी है । इस आन्तरिक परिवर्तन के लिए गतिविधियों के अमिट, निर्धारण के लिए जो साहस जुटा लेते हैं वे देखते हैं प्रगति पथ पर बढ़ चलने की कितनी सहज सुविधा उपलब्ध थी । अदूरदर्शी आदतों ने ही उस सौभाग्य से मुँह मोड़ा जो ईश्वर ने हर किसी को जीवन लक्ष्य पूरा कर सकने के निमित्त उदारता पूर्वक प्रदान किया है ।

सामान्य परिस्थितियों में जन्मे और कठिनाइयों से घिरे व्यक्ति भी चरमोत्कर्ष के लक्ष्य तक पहुँचे और महामानव बने हैं । दूसरे लोग जिन परिस्थितियों को विवशता मानते रहे उनने उन्हें इस रूप में देखा ही नहीं । नये ढंग से सोचा और नया मार्ग निकाला । फलतः परिस्थितियां अपनी जगह पर बनी रहीं और अग्रगमन के लिए दूसरा रास्ता निकल आया । महामानवों में से प्रत्येक का जीवन क्रम इसका साक्षी है कि उनने परिस्थितियों को अपरिहार्य नहीं माना और उनके न बदलने पर अपना ढर्रा बदलने का साहस जुटाया । पिछड़ेपन और प्रगतिशीलता का मध्यवर्ती अन्तर इतना ही है । जो इस रहस्य को समझते हैं उनके लिये बैतालों के जादू तिलस्मसे बाहर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निकलना और देवोंके उन्मुक्त आकाशमें विचरण करना कुछ भी कठिन नहीं रह जाता। तिलस्म अवास्तविक है। स्व सम्मोहन और आत्मसमर्पण ही उसका आधार है। अन्तरंग बदलते ही बहिरंग के उलटने में देर नहीं लगती। जो भीतर की गुत्थी सुलझा सके उनके लिए बाहरी समस्याओं का हल निकालते देर नहीं लगती। प्रपंच का जंजाल तो भीतर ही भरा पड़ा है। अपच होने से ही स्वादिष्ट व्यंजन कड़ुए लगते हैं।

यदि विलासी लिप्सा और संग्रह की तृष्ण को हलका किया जा सके तो औसत भारतीय जैसा नैतिक निर्वाह आसानी से उपार्जित हो सकता है। यदि परिवार को बढ़ाने की मूर्खता न की जाय, जो अब तक की है उसे स्वावलम्बी सुसंस्कारी बनाना भर कर्त्तव्य माना जाय तो उस परिपोषण के लिए सामान्य प्रयास से ही काम चल सकता है। बोझिल जीवन तो उनका होता है जो अमीरी के स्वप्न देखते और उत्तराधिकारियों को वैभव से लादने की ललक सँजोये रहते हैं। बोझ इस दुश्चिन्तन भर का है। न किसी के लिए पेट भारी पड़ता है और न परिवार। बोझिल तो वह मूर्खता है जो लिप्सा तृष्णा के रूप में जोंक की तरह शिराओं में दाँत गढ़ाये रहती है। आवश्यकता हर किसी की पूरी हो सकती है, पर तृष्णा की आग को बुझा सकना कितने ही प्रचुर वैभव से सम्भव नहीं हो सकता। ईंधन पड़ने पर वह शान्त कहाँ होती, दूनी-चौगुनी भड़कती है।

प्रसुप्ति ग्रस्तों का चिन्तन और आचरण जैसा होता है उसकी तुलना में जाग्रतों के सोचने और करने में भारी अन्तर रहता है। जागृतों को मोह ग्रस्तों की तरह नहीं सोचना चाहिए, उन्हे सुख में ही लिप्त नहीं रहना चाहिए सन्तोष भी उपार्जित करना चाहिए। बड़प्पन ही पर्याप्त नहीं महानता भी अभीष्ट है। वाहवाही लूटने के लिए उद्धत प्रदर्शन का सरंजाम जुटाने में सार नहीं महत्व उस लोक श्रद्धा का है जो उत्कृष्टता और उदारता अपनाने पर प्रचुर परिमाण में उपलब्ध होती और अन्तरात्मा को आनन्द भरी पुलकन से परितृप्त करती है।

हर जागरूक को इन दिनों इसी स्तर का प्रगतिशील चिन्तन अपनाना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चाहिए और ढर्रे में ऐसा परिवर्तन करना चाहिए जिससे इस विषम वेला में आपत्ति धर्म का निर्वाह कर सकना सम्भव हो सके। ढूँढ़ने पर हर किसी को राह मिलती है। यदि आकांक्षा सच्ची हो तो एक न सही दूसरे ढंग से सही कोई हल निश्चत रूप से ऐसा निकल सकता है जिसमें निर्वाह भी कठिन न पड़े और जीवन लक्ष्य पाने तथा युग धर्म निभाने का अवसर भी मिलता रहे।

रोज कुँआ खोदने और रोज पानी पीने वाले भी यदि आदर्शवादिता को अपना सकें तो आठ घण्टा कमाने के—सात घण्टा सोने के—पाँच घण्टा गृह कार्यों के लिए लगाकर बीस घण्टे में संसार यात्रा भली प्रकार चला सकते हैं हैं और शेष चार घण्टे बिना किसी कठिनाई के युग धर्म के निर्वाह में नियमित रूप से लगा सकते हैं। बहानेबाजों की बात दूसरी है। उन्हें बीस बहाने पहले से ही याद हैं। चाहें तो चालीस और भी गढ़ सकते हैं। इन भावना रहित लोगों की आत्म-प्रवंचना ही मूल भूत कठिनाई है। यथार्थ चिन्तन की कसौटी पर उनकी वह मनगढ़न्त नितान्त बनावटी लगती है जिसका आश्रय लेकर वे अपनी जागरूकता को कर्त्तव्य पथ पर चलने से रोके रहते हैं।

पूरा समय आत्म-कल्याण और लोक-कल्याण में लगा सकने की परिस्थिति प्रायः आधे लोगों की होती है। संचित सम्पदा को समेटकर यदि स्थाई निधि के रूप में जमा कर दिया जाय तो दस प्रतिशत ब्याज भर से इतना पैसा सहज ही मिलता रह सकता है जिसमें निर्वाह भी होता रहे और देव जीवन भी जिया जा सके। परिजनों को स्वावलम्बी भर बनाने का लक्ष्य हो तो उनमें अन्य समर्थों को बैठकर न खाने कुछ कमाने के लिए उत्साह उत्पन्न किया जा सकता है। बैठकर खाने में इज्जत और कमाने में अपमान की मान्यता यदि बदली जा सके तो प्रतीत होगा कि बचे हुए सयम में घर के समर्थ लोग कुछ न कुछ कमा सकते हैं और एक व्यक्ति पर लदे हुए भार को बहुत कुछ हलका कर सकते है। बेटों को बैरिस्टर बनाने और लड़की को कुबेर के घर भेजने का नशा हलका किया जा सके और उन्हें औसत नागरिकों की तरह निर्वाह करने और सुसंस्कारी गतिविधियाँ अपनाने के मार्ग पर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चलाया जा सके तो प्रतीत होगा कि पहाड़ जैसा बोझ उतरकर हलका हो गया। सन्तानें स्वावलम्बी हो जाने पर छोटे परिवार से विदाई लेनी चाहिए और बड़े परिवार—विश्व परिवार की बात सोचनी चाहिए।

परिस्थितियां असंख्यों की ऐसी हैं जिनको युग धर्म के निर्वाह की समुचित सुविधाएं प्राप्त हैं। हथकड़ियां मोह की और बेड़ियां लोभ की हैं जो एक कदम आगे बढ़ने और एक परमार्थ करने देने में अवरोध अटकाती है। इन्हें तोड़ा न जा सके तो ऐंठ मरोड़कर ढीला तो किया ही जा सकता है। इतने भर से दौड़ना न सही घिसटना तो निश्चित रूप से सम्भव हो सकता है।

युग सन्धि की इस पुनीत वेला में आपत्ति धर्म के निर्वाह से मुँह मोड़ना ऐसा प्रमाद है जिसके लिए समय निकल जाने पर हाथ मलना और पश्चात्ताप करना ही शेष रह जायगा।

देवताओं से सहायता मांगने की बात तो सदा ही चलती है, पर कुछ विशेष समय ऐसे भी आते हैं जब देवता मनुष्य से याचना करते हैं। ऐसे अवसर किन्हीं सौभाग्यवानों को ही मिलते हैं जब वे देवताओं की मनोकामना पूरी करने में समर्थ हो सकें। दशरथ को देवताओं की सहायता के लिए जाना पड़ा था। अर्जुन भी गये थे। दधीचि ने उदारतापूर्वक उन्हें दान दिया था। कृष्ण साधु के वेश में घायल कर्ण के पास पहुँचे थे। वामन ने बलि के सामने हाथ पसारा था। राम ने शबरी से बेर की याचना की थी। सुदामा से तन्दुल मांगे गये थे। अंगद और हनुमान ने देवताओं से अपनी कामना पूर्ण नहीं कराई थी वरन् उनकी पूरी की थी। इस प्रसंग में ऋषियों की परम्परा याद आ जाती है। विश्वामित्र ने हरिश्चन्द्र से, उद्दालक ने आरुणि से, चाणक्य ने चन्द्रगुप्त से समर्थ ने शिवाजी से, परमहन्स ने विवेकानन्द से, विरजानन्द ने दयानन्द से कुछ मांगा था और सत्पात्र शिष्यों ने जी खोल कर दिया भी था। बुद्ध और गांधी की झोलियां आदि से अन्त तक फैली ही रहीं। देने वाले घाटे में नहीं रहे। लेने वाले जितने धन्य हुए उससे अधिक श्रेय देने वाले को मिला। मान्धाता ने शंकराचार्य को जो दिया था उससे अधिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पाया। अंगुलि माल और अम्बपाली, हर्षवर्धन और अशोक; बुद्ध को देते समय उदारता की चरम सीमा पर पहुँचे थे। गांधी के सत्याग्रहियों ने अनुदानों को अपने दाव पर झडी लगा दी थी। देखते हैं कि जो दिया गया था वह निरर्थक नहीं गया; वरन् असंख्य गुना होकर उन उदार मनाओं के ऊपर दैवी वरदान की तरह इस प्रकार बरसा कि वे कृत-कृत्य हो गये। धनी अकेले भामाशाह ही नहीं हुए हैं। मरण अकेले भगतसिंह के हिस्से में ही नहीं आया है। जेल अकेले नेहरू पटेल ही नहीं गये हैं। मुसीबतें बहुतों को आती हैं। त्यागने के लिए हर किसी को विवश होना पड़ता है। किसी से चोर छीनता है किसी से बेटा। पेट भरने और तन ढकने के अतिरिक्त और किसी के पल्ले कुछ नहीं पड़ता। जब विरानों के लिए ही सब कुछ छोड़ना है तो इन विरानों का स्तर कुछ ऊँचा क्यों न उठा लिया। जाय जब अपना उपार्जन श्रम, सहयोग किसी को देना ही है तो उन्हें देवताओं ऋषियों एवं सदुद्देश्यों के लिए ही क्यों न दिया जाय ? इस उदार नीति को अपनाने वाले बैंक में जमा की गई पूँजी की तरह ब्याज समेत लम्बा लाभपाते हैं जबकि मोहके गर्तमें धकेली हुई उपलब्धियाँ निरर्थक ही नहीं जातीं विघातक प्रतिक्रिया भी उत्पन्न करती हैं।

दूसरों से बात करने में समय और चातुर्य का कचूमर निकल जाता है। यदि अपने से भी एकान्त में जी खोलकर समझदारी की वात की जा सके और अभिन्नों के सहयोग से बनने वाली सृजनात्मक योजना बनाने जैसा कुछ किया जा सके तो अन्तःलोक में प्रसुप्त पड़े देवता ही जागृत होकर ऐसा परामर्श एवं सहयोग देने लगेंगे जिन्हें पाकर समस्त अभाव की पूर्ति और समस्त वैभव की उपलब्धि हो सकती है।

क०/८८ ब०-युग निर्माण योजना, मु०-युगनिर्माण प्रेस ,मथुरा मूल्य ४०पैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org